मारवाड़ क्षेत्र में अश्व प्रबंधन और सैन्य व्यवस्था: एक ऐतिहासिक विश्लेषण
(वि.सं. 1824 की हथ बही दस्तावेज़ के आधार पर)

संगम जांगिड़

परिचय

विक्रम संवत 1824 (लगभग सन् 1767–68 ई.) की जोधपुर राज्य की *हथ बही* एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, जो मारवाड़ क्षेत्र की प्रशासनिक, सैन्य, और सामाजिक व्यवस्था की गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह बही महाराजा विजय सिंह के शासन काल की है। यह दस्तावेज़ विशेष रूप से अश्व प्रबंधन और सैन्य व्यवस्था पर केंद्रित है, जो उस समय मारवाड़ की सांस्कृतिक और रणनीतिक पहचान का अभिन्न अंग थे। मारवाड़, जो अपनी घुड़सवारी परंपरा, राजपूत शौर्य, और सैन्य शक्ति के लिए विख्यात था, में घोड़े केवल युद्ध के साधन ही नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक संपदा, और कूटनीतिक संबंधों के प्रतीक भी थे।

हथ बही में जोधपुर राज्य के विभिन्न तालुकों, जैसे नागौर, परबतसर, फलोदी, और मारोठ, में घोड़ों–घोड़ियों, बछेरों, और बछेरियों की संख्या, उनके रंग, स्थिति, खरीद–बिक्री, और सैन्य उपयोग का व्यवस्थित विवरण दर्ज है। यह दस्तावेज़ न केवल घोड़ों के रख–रखाव और प्रजनन की प्रशासनिक प्रक्रियाओं को दर्शाता है, बल्कि 18वीं शताब्दी के मारवाड़ में सैन्य संगठन, आर्थिक प्रबंधन, और सामाजिक संरचना की जटिलताओं को भी उजागर करता है। उस समय का मारवाड़, मराठा आक्रमणों, पड़ोसी राज्यों के साथ तनाव, और आंतरिक प्रशासनिक चुनौतियों से जूझ रहा था, जिसके संदर्भ में यह *हथ बही* सैन्य तैयारियों और संसाधन प्रबंधन की गंभीरता को रेखांकित करती है। इस विश्लेषण के माध्यम से, हम हथ बही के आधार पर मारवाड़ में अश्व प्रबंधन की तकनीकी और प्रशासनिक प्रणाली, सैन्य व्यवस्था में घोड़ों की केंद्रीय भूमिका, और उनके आर्थिक व सामाजिक महत्व का विस्तृत अध्ययन करेंगे। यह अध्ययन इतिहासकारों, शोधकर्ताओं, और मारवाड़ की सांस्कृतिक विरासत में रुचि रखने वालों के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करेगा, जो इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गतिशीलता को समझने में सहायता प्रदान करता है।

अश्व प्रबंधन की प्रणाली

विक्रम संवत 1824 की जोधपुर राज्य की *हथ बही* मारवाड़ में अश्व प्रबंधन की एक सुव्यवस्थित, जटिल, और बहुआयामी प्रणाली को उजागर करती है, जो उस समय की सैन्य, आर्थिक, और प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने में केंद्रीय भूमिका निभाती थी। यह दस्तावेज़ घोड़ों-घोड़ियों, तथा बछेरों-बछेरियों की संख्या, उनके रंग, शारीरिक स्थिति, खरीद-बिक्री, रख-रखाव, और प्रजनन प्रबंधन का विस्तृत रिकॉर्ड प्रस्तुत करता है। मारवाड़, जो अपनी घुड़सवारी परंपरा और राजपूत शौर्य के लिए विख्यात था, में घोड़े केवल युद्ध के साधन ही नहीं थे, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक संपदा, और कूटनीतिक संबंधों के प्रतीक भी थे। हथ बही में जोधपुर राज्य के विभिन्न तालुकों, जैसे नागौर, परबतसर, फलोदी, मारोठ, और पाली, में अश्व प्रबंधन की क्षेत्रीय और केंद्रीकृत प्रणालियों का विवरण दर्ज है, जो मारवाड़ की प्रशासनिक दक्षता और रणनीतिक दूरदर्शिता को दर्शाता है। अश्व प्रबंधन की इस प्रणाली को निम्नलिखित पहलुओं के माध्यम से विस्तार से विश्लेषित किया जा सकता है।

अश्व प्रबंधन का पहला महत्वपूर्ण पहलू घोड़ों और घोड़ियों की संख्या और उनके वर्गीकरण की व्यवस्थित रिकॉर्डिंग था। *हथ बही* में विभिन्न तालुकों में सैकड़ों घोड़ों और घोड़ियों का उल्लेख है, जो उनकी उपयोगिता, गुणवत्ता, और स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किए गए थे। घोड़ों को उनके रंग के आधार पर, जैसे *नीलो* (नीला), *कुमेत* (गहरा भूरा), *सुरंग* (लाल-भूरा), *भंवर, कागड़ी,* और *पीलो,* में विभाजित किया गया था।[1] यह वर्गीकरण संभवत: उनकी नस्ल, शारीरिक विशेषताओं, या सैन्य उपयोगिता को दर्शाता था। इसके अतिरिक्त, घोड़े और घोड़ियाँ विभिन्न श्रेणियों में बँटे थे, जैसे- *वारगीर* (सैन्य उपयोग के लिए), *सुभर* (गर्भवती घोड़ियाँ), *खाली* (बिना कार्य), और *अजनास* (कम गुणवत्ता या अनुपयोगी)। उदाहरण के लिए, कुछ घोड़े *हाकम, कारकून,* या *दरोगा* जैसे अधिकारियों के वारगीरों को आवंटित थे, जबकि अन्य गर्भवती घोड़ियाँ प्रजनन के लिए आरक्षित थीं। *बछेरे* और *बछेरियाँ,* जिनकी आयु महीनों या वर्षों में दर्ज की गई थी, दीर्घकालिक संसाधन विकास का हिस्सा थे। यह व्यवस्थित वर्गीकरण न केवल घोड़ों की उपयोगिता को स्पष्ट करता था, बल्कि उनके प्रबंधन और आवंटन में पारदर्शिता और अनुशासन को भी सुनिश्चित करता था।[2]

अश्व प्रबंधन का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू घोड़ों की खरीद और बिक्री थी, जो एक सक्रिय आर्थिक गतिविधि के रूप में उभरती है। *हथ बही* में नए घोड़ों की खरीद के

विवरण, उनकी कीमत, और स्रोतों का उल्लेख है, जो घोड़ों की गुणवत्ता और सैन्य आवश्यकताओं के आधार पर भिन्न थे। कुछ घोड़े उच्च कीमतों, जैसे 130 रुपये से लेकर 80 रुपये में खरीदे जाते थे, जबकि अन्य कम कीमतों, जैसे 30 रुपये से लेकर 48 रुपये में प्राप्त किए जाते थे।[3] यह मूल्य भिन्नता घोड़ों की नस्ल, आयु, और उपयोगिता पर निर्भर थी। इसके अलावा, कुछ घोड़े और घोड़ियाँ बेचे गए या अन्य दरबारों, जैसे जैसलमेर या नागौर, को भेंट किए गए, जो कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करने का हिस्सा था। खरीद और बिक्री के साथ-साथ, घोड़ों के रखरखाव और प्रबंधन पर होने वाले खर्च का भी हिसाब रखा जाता था, जो आर्थिक नियोजन और जवाबदेही को दर्शाता है। यह प्रणाली मारवाड़ की आर्थिक समृद्धि और संसाधन प्रबंधन की क्षमता को रेखांकित करती है, जो सैन्य और सामाजिक गतिविधियों को समर्थन देती थी।

घोड़ों का रख-रखाव और देखभाल अश्व प्रबंधन का तीसरा महत्वपूर्ण आयाम था, जिसमें चारा, स्वास्थ्य, और प्रजनन प्रबंधन शामिल थे। घोड़ों को खालसा गाँवों के चारागाहों में चराया जाता था, और उन्हें धान, घी, और अन्य पौष्टिक सामग्री प्रदान की जाती थी। कुछ घोड़ों को प्रतिदिन धान और घी दिया जाता था, जो उनके पोषण और शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान को दर्शाता है। स्वास्थ्य देखभाल के संदर्भ में, घोड़ों की शारीरिक स्थिति का नियमित निरीक्षण किया जाता था, और उन्हें *पग सुड़ावै* (पैर में चोट), *पाछला पगां चकोका* (पिछले पैरों में चोट), या *अजनास* (कमजोर) जैसी श्रेणियों में चिह्नित किया जाता था। प्रजनन प्रबंधन भी इस प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसमें गर्भवती (*सुभर*) घोड़ियों और बछेरों-बछेरियों का रिकॉर्ड रखा जाता था। *सुभर* घोड़ियाँ, जो प्रजनन के लिए आरक्षित थीं, और बछेरे-बछेरियाँ, जिनकी आयु 1-2 वर्ष या कुछ महीनों में थी, भविष्य के संसाधनों के रूप में महत्वपूर्ण थे। यह दीर्घकालिक दृष्टिकोण मारवाड़ की अश्व प्रणाली की स्थिरता और निरंतरता को सुनिश्चित करता था।[4]

अश्व प्रबंधन की प्रशासनिक व्यवस्था इस प्रणाली का चौथा और सबसे प्रभावशाली पहलू थी, जो जोधपुर राज्य की प्रशासनिक दक्षता और संगठनात्मक कौशल को दर्शाती है। *हथ बही* का प्रारूप अत्यंत व्यवस्थित था, जिसमें प्रत्येक तालुके के लिए अलग-अलग कागद शामिल थे। इन कागदों में घोड़ों की संख्या, उनके *वारगीर* (सैन्य उपयोगकर्ता), और उनकी स्थिति का विवरण दर्ज था। प्रबंधन का कार्य स्थानीय अधिकारियों, जैसे *हाकम, कारकून,* और *दरोगा* द्वारा किया जाता था, जो क्षेत्रीय स्तर पर जवाबदेह थे। दस्तावेज़ में फाल्गुन वदी 4 से 7 तक की समय-सीमा में दर्ज करने का

उल्लेख है, जो एक निश्चित और नियमित प्रक्रिया को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, घोड़ों और घोड़ियों की स्थिति का समय-समय पर निरीक्षण और पुनर्मूल्यांकन किया जाता था, जैसे कि चार महीने बाद दोबारा *चोकस* (निरीक्षण) करने का उल्लेख। यह जवाबदेही और गुणवत्ता नियंत्रण की प्रणाली मारवाड़ के प्रशासनिक ढांचे की मजबूती को रेखांकित करती है, जो सैन्य और आर्थिक संसाधनों के कुशल प्रबंधन को सुनिश्चित करती थी।[5]

निष्कर्षत:, मारवाड़ में अश्व प्रबंधन की प्रणाली एक अत्यंत व्यवस्थित और बहुआयामी व्यवस्था थी, जो सैन्य शक्ति, आर्थिक समृद्धि, और प्रशासनिक दक्षता को एकीकृत करती थी। घोड़ों और घोड़ियों की संख्या, वर्गीकरण, खरीद-बिक्री, रखरखाव, और प्रजनन प्रबंधन का विस्तृत रिकॉर्ड इस प्रणाली की व्यापकता को दर्शाता है। यह प्रणाली न केवल मारवाड़ की सैन्य तैयारियों, जैसे मराठा आक्रमणों और क्षेत्रीय संघर्षों, को समर्थन देती थी, बल्कि इसकी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करती थी। हथ बही इस प्रणाली का एक अमूल्य ऐतिहासिक स्रोत है, जो 18वीं शताब्दी के मारवाड़ की रणनीतिक और प्रशासनिक गतिशीलता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सैन्य व्यवस्था में अश्वों की भूमिका

विक्रम संवत 1824 की जोधपुर राज्य की *हथ बही* मारवाड़ की सैन्य व्यवस्था में अश्वों की केंद्रीय और अपरिहार्य भूमिका को रेखांकित करती है। मारवाड़, जो अपनी घुड़सवारी परंपरा, राजपूत शौर्य, और सैन्य कौशल के लिए विख्यात था, में घोड़े सैन्य शक्ति का आधार थे। 18वीं शताब्दी के इस काल में, जब मारवाड़-मराठा आक्रमणों, पड़ोसी राज्यों के साथ तनाव, और क्षेत्रीय युद्धों का सामना कर रहा था, घोड़ों की गतिशीलता, शक्ति, और रणनीतिक उपयोग सैन्य सफलता के लिए महत्वपूर्ण थे।[6] *हथ बही* घोड़ों के सैन्य उपयोग, उनके प्रशिक्षण, और *वारगीरों* (घुड़सवार सैनिकों) के संगठन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है, जो मारवाड़ की सैन्य रणनीति और अनुशासन को दर्शाता है। यह दस्तावेज़ न केवल घोड़ों की सैन्य भूमिका को उजागर करता है, बल्कि उनकी गुणवत्ता, आवंटन, और प्रतीकात्मक महत्व को भी स्पष्ट करता है।

सैन्य व्यवस्था में अश्वों की सबसे प्रमुख भूमिका *वारगीरों* (घुड़सवार सैनिकों) के लिए थी, जो मारवाड़ की सेना का अभिन्न अंग थे। *हथ बही* में दर्ज जानकारी के अनुसार, अधिकांश घोड़े और घोड़ियाँ विभिन्न अधिकारियों और सैनिकों, जैसे हाकम, कारकून, दरोगा, और सिल्हेपोस (स्थानीय सैन्य नेता), के वारगीरों को आवंटित थे। ये

वारगीर युद्ध में घोड़ों की गतिशीलता और शक्ति का उपयोग करके रणनीतिक हमले, त्वरित गतिविधियाँ, और रक्षात्मक युद्धनीति को अंजाम देते थे। उदाहरण के लिए, कुछ घोड़े *हाकम रे वारगीर, कारकून रे वारगीर,* तथा *दरोगाओं के वारगीरों* को दिए गए थे, जो उनकी सैन्य जिम्मेदारियों को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, मारोठ जैसे क्षेत्रों में फोज (सेना) के डेरे (शिविर) में घोड़ों का उपयोग दर्ज है, जो सैन्य अभियानों में उनकी सक्रिय भागीदारी को दर्शाता है। यह व्यवस्था मारवाड़ की सैन्य रणनीति में घुड़सवारी की केंद्रीयता को उजागर करती है, जो तत्कालीन युद्धों में गतिशीलता और आश्चर्यजनक हमलों के लिए आवश्यक थी।[7]

घोड़ों की सैन्य भूमिका को और सुदृढ़ करने के लिए, उनकी गुणवत्ता और प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। *हथ बही* में घोड़ों को उनकी शारीरिक स्थिति और उपयोगिता के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। उच्च गुणवत्ता वाले घोड़े, जैसे *नीलो, कुमेत,* और *सुरंग,* सैन्य कार्यों के लिए प्राथमिकता प्राप्त करते थे, जबकि *अजनास* (कमजोर या अनुपयोगी) घोड़े और घोड़ियाँ गैर-सैन्य कार्यों या प्रजनन के लिए उपयोग किए जाते थे। उदाहरण के लिए, कुछ घोड़ियाँ *अजनास* या बुढी (वृद्ध) होने के कारण सैन्य उपयोग के लिए अनुपयुक्त थीं[8], जबकि नए खरीदे गए घोड़े, जैसे 130 रुपये या 80 रुपये में खरीदे गए, सैन्य अभियानों के लिए तैयार किए जाते थे। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षित घुड़सवारों, जिन्हें चढ़ा बारगीर कहा गया, की संख्या और संगठन पर जोर दिया गया था। कुछ स्थानों पर 27 चढ़ा बारगीरों का उल्लेख है, जो युद्ध के लिए तैयार घुड़सवारों की एक मजबूत टुकड़ी को दर्शाता है। यह प्रशिक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण मारवाड़ की सैन्य तैयारियों की गंभीरता और अनुशासन को रेखांकित करता है।[9]

सैन्य व्यवस्था में घोड़ों की प्रतीकात्मक और रणनीतिक भूमिका को *नगारा* और *नीसाण* जैसे विशेष उपयोगों से भी समझा जा सकता है। *हथ बही* में कुछ घोड़ों को *नगारा* (युद्ध ढोल) और *नीसाण* (झंडा) के लिए उपयोग किए जाने का उल्लेख है, जो सैन्य संकेतों और प्रतीकों के रूप में महत्वपूर्ण थे।[10] *नगारा* युद्ध के दौरान सैनिकों को दिशा-निर्देश देने और मनोबल बढ़ाने का साधन था, जबकि *नीसाण* सेना की पहचान और गौरव का प्रतीक था। इन घोड़ों का चयन उनकी शारीरिक क्षमता और प्रशिक्षण के आधार पर किया जाता था, जो उनकी सैन्य महत्व को और बढ़ाता था। इसके अलावा, कुछ घोड़े कूटनीतिक उद्देश्यों के लिए अन्य दरबारों, जैसे जेसलमेर, को भेंट किए गए, जो सैन्य शक्ति के साथ-साथ मारवाड़ की कूटनीतिक रणनीति को दर्शाता है। यह प्रतीकात्मक

उपयोग घोड़ों को केवल युद्ध के साधन से आगे बढ़ाकर सैन्य और सामाजिक गौरव का प्रतीक बनाता था।[11]

सैन्य व्यवस्था में घोड़ों की भूमिका को संगठनात्मक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है, जो *हथ बही* में *हाजरी* (उपस्थिति) और *लश्कर* (सेना) के उल्लेख से स्पष्ट होता है। हाजरी का रिकॉर्ड सैन्य अनुशासन और घुड़सवारों की उपलब्धता को दर्शाता है, जो युद्ध के लिए तैयारियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। उदाहरण के लिए, परबतसर[12] में हाजरी का उल्लेख सैन्य संगठन की व्यवस्थित प्रकृति को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, लश्कर में व्यक्तियों के नामों का स्पष्ट उल्लेख सेना की संरचना और घोड़ों के उपयोग को और स्पष्ट करता है।[13] यह संगठनात्मक ढांचा मारवाड़ की सैन्य शक्ति को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता को दर्शाता है, जो तत्कालीन क्षेत्रीय संघर्षों और मराठा आक्रमणों के संदर्भ में महत्वपूर्ण था।

निष्कर्षत:, मारवाड़ की सैन्य व्यवस्था में अश्वों की भूमिका बहुआयामी और अपरिहार्य थी। वे वारगीरों के लिए युद्ध के प्रमुख साधन थे, जिनकी गतिशीलता और ताकत सैन्य रणनीति का आधार थी। उनकी गुणवत्ता, प्रशिक्षण, और प्रतीकात्मक उपयोग, जैसे *नगारा* और *नीसाण,* ने उनकी सैन्य और सामाजिक महत्व को और बढ़ाया। *हथ बही* में दर्ज व्यवस्थित रिकॉर्डिंग, हाजरी, और संगठनात्मक ढांचा मारवाड़ की सैन्य अनुशासन और प्रशासनिक दक्षता को दर्शाता है। यह प्रणाली न केवल मारवाड़ की सैन्य शक्ति को बनाए रखने में सहायक थी, बल्कि उसकी सांस्कृतिक और कूटनीतिक पहचान को भी मजबूत करती थी। *हथ बही* इस भूमिका का एक अमूल्य ऐतिहासिक स्रोत है, जो 18वीं शताब्दी के मारवाड़ की सैन्य गतिशीलता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

आर्थिक और सामाजिक प्रासंगिकता

विक्रम संवत 1824 की जोधपुर राज्य की *हथ बही* मारवाड़ में घोड़ों की आर्थिक और सामाजिक प्रासंगिकता को व्यापक रूप से उजागर करती है। मारवाड़, जो अपनी घुड़सवारी परंपरा और राजपूत सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध था, में घोड़े केवल सैन्य संसाधन ही नहीं थे, बल्कि आर्थिक समृद्धि, सामाजिक प्रतिष्ठा, और कूटनीतिक संबंधों के प्रतीक भी थे। *हथ बही* में घोड़ों की खरीद-बिक्री, उनके रखरखाव की लागत, प्रजनन प्रबंधन, और सामाजिक उपयोग का विस्तृत विवरण दर्ज है, जो यह दर्शाता है कि अश्व प्रबंधन मारवाड़ की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग था। 18वीं शताब्दी के इस काल में, जब मारवाड़-मराठा आक्रमणों और क्षेत्रीय चुनौतियों का सामना

कर रहा था, घोड़ों का आर्थिक और सामाजिक महत्व उनकी सैन्य भूमिका से परे जाकर राज्य की स्थिरता और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में सहायक था।

आर्थिक दृष्टिकोण से, घोड़े मारवाड़ की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण संसाधन थे, जिनकी खरीद-बिक्री और रख-रखाव एक सक्रिय और लाभकारी गतिविधि थी। हथ बही में नए घोड़ों की खरीद के विवरण, उनकी कीमत, और स्रोतों का उल्लेख है, जो इस व्यापार की व्यापकता को दर्शाता है। कुछ घोड़े उच्च कीमतों, जैसे 130 रुपये से लेकर 80 रुपये के मध्य खरीदे जाते थे, जो उनकी उच्च गुणवत्ता और सैन्य उपयोगिता को दर्शाता है, जबकि अन्य कम कीमतों, जैसे 30 रुपये से लेकर 48 रुपये के मध्य खरीद किए जाते थे, जो सामान्य उपयोग के लिए थे। यह मूल्य भिन्नता घोड़ों की नस्ल, आयु, और शारीरिक स्थिति पर निर्भर थी। इसके अतिरिक्त, कुछ घोड़े और घोड़ियाँ बेचे गए या अन्य दरबारों, जैसे जेसलमेर और नागौर, को भेंट किए गए, जो कूटनीतिक और आर्थिक लेन-देन का हिस्सा था। घोड़ों के रख-रखाव पर भी महत्वपूर्ण खर्च होता था, जिसमें चारा, जैसे धान और घी, की आपूर्ति शामिल थी। कुछ घोड़ों को प्रतिदिन धान और घी के साथ-साथ पौष्टिक आहार प्रदान किया जाता था, जो रखरखाव की उच्च लागत को दर्शाता है। यह आर्थिक निवेश मारवाड़ की समृद्धि और संसाधन प्रबंधन की क्षमता को रेखांकित करता है, जो सैन्य और सामाजिक गतिविधियों को समर्थन देता था।[14]

प्रजनन प्रबंधन घोड़ों की आर्थिक प्रासंगिकता का एक और महत्वपूर्ण पहलू था, जो दीर्घकालिक संसाधन विकास को सुनिश्चित करता था। *हथ बही* में गर्भवती (सुभर) घोड़ियों और बछेरों-बछेरियों की संख्या और उनकी आयु का रिकॉर्ड दर्ज है, जो प्रजनन की व्यवस्थित प्रक्रिया को दर्शाता है। सुभर घोड़ियाँ, जो प्रजनन के लिए आरक्षित थीं, और बछेरे-बछेरियाँ, जिनकी आयु 1-2 वर्ष या कुछ महीनों में थी, भविष्य के घोड़ों के रूप में महत्वपूर्ण थे। यह प्रणाली न केवल घोड़ों की संख्या को बनाए रखने में सहायक थी, बल्कि नए घोड़ों की खरीद पर निर्भरता को भी कम करती थी। उदाहरण के लिए, कुछ स्थानों पर 10 बछेरियाँ और 12 बछेरे दर्ज हैं, जो प्रजनन के माध्यम से आर्थिक लाभ की संभावना को दर्शाते हैं। यह दीर्घकालिक आर्थिक रणनीति मारवाड़ की आत्मनिर्भरता और दूरदर्शी प्रबंधन को उजागर करती है, जो सैन्य और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक थी।[15]

सामाजिक दृष्टिकोण से, घोड़े मारवाड़ में प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक थे, जो राजपूत समाज की मूल्य प्रणाली को दर्शाते थे। *हथ बही* में 'दरबार रा

घोड़ा'[16] जैसे मद घोड़ों के दरबारी गौरव और शक्ति से जुड़े होने का संकेत देते हैं। घोड़े न केवल सैन्य शक्ति का प्रतीक थे, बल्कि सामाजिक हैसियत और वीरता के प्रदर्शन का साधन भी थे। उच्च गुणवत्ता वाले घोड़े, जैसे *नीलो* या *कुमेत,* उच्च पदस्थ अधिकारियों, जैसे हाकम या दरोगा, को आवंटित किए जाते थे, जो उनकी सामाजिक स्थिति को और मजबूत करते थे। इसके अतिरिक्त, घोड़ों का उपयोग सामाजिक और कूटनीतिक संबंधों को बढ़ाने में भी किया जाता था। कुछ घोड़े अन्य दरबारों को भेंट किए गए, जैसे जैसलमेर को दिया गया एक घोड़ा, जो कूटनीतिक गठबंधनों और मैत्रीपूर्ण संबंधों का हिस्सा था। यह प्रथा मारवाड़ की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना में घोड़ों के प्रतीकात्मक महत्व को दर्शाती है, जो राजपूत परंपरा का एक अभिन्न अंग थी।

घोड़ों की सामाजिक प्रासंगिकता को मारवाड़ की सांस्कृतिक पहचान और घुड़सवारी परंपरा के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। मारवाड़ की घुड़सवारी परंपरा न केवल सैन्य कौशल का हिस्सा थी, बल्कि सांस्कृतिक गौरव और सामुदायिक एकता का प्रतीक भी थी। घोड़ों का प्रबंधन और उनका उपयोग सामाजिक आयोजनों, जैसे दरबारी समारोहों या सैन्य प्रदर्शनों, में भी किया जाता था, जो मारवाड़ की सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाता है।

निष्कर्षत:, मारवाड़ में घोड़ों की आर्थिक और सामाजिक प्रासंगिकता उनकी सैन्य भूमिका से कहीं अधिक व्यापक थी। आर्थिक रूप से, घोड़े खरीद-बिक्री, रखरखाव, और प्रजनन के माध्यम से मारवाड़ की समृद्धि और आत्मनिर्भरता को समर्थन देते थे। सामाजिक रूप से, वे प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक पहचान, और कूटनीतिक संबंधों के प्रतीक थे, जो राजपूत परंपरा और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग थे। हथ बही इस दोहरे महत्व का एक अमूल्य ऐतिहासिक स्रोत है, जो 18वीं शताब्दी के मारवाड़ की आर्थिक स्थिरता, सामाजिक गतिशीलता, और सांस्कृतिक विरासत को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। घोड़ों का प्रबंधन और उपयोग मारवाड़ की सैन्य, आर्थिक, और सामाजिक व्यवस्था को एकीकृत करने में सहायक था, जिसने इस क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान को और मजबूत किया।

निष्कर्ष

विक्रम संवत 1824 (लगभग सन् 1767-68 ई.) की जोधपुर राज्य की *हथ बही* मारवाड़ में अश्व प्रबंधन और सैन्य व्यवस्था की एक व्यापक और गहन तस्वीर प्रस्तुत करती है, जो 18वीं शताब्दी के मध्य के इस क्षेत्र की सैन्य, आर्थिक, प्रशासनिक, और

सांस्कृतिक गतिशीलता को उजागर करती है। यह दस्तावेज़ घोड़ों की संख्या, उनके रंग, स्थिति, खरीद-बिक्री, रखरखाव, प्रजनन प्रबंधन, और सैन्य उपयोग का व्यवस्थित रिकॉर्ड प्रदान करता है, जो मारवाड़ की प्रशासनिक दक्षता, रणनीतिक दूरदर्शिता, और सांस्कृतिक पहचान का प्रमाण है। मारवाड़, जो अपनी घुड़सवारी परंपरा और राजपूत शौर्य के लिए विख्यात था, में घोड़े केवल सैन्य शक्ति का आधार ही नहीं थे, बल्कि आर्थिक समृद्धि, सामाजिक प्रतिष्ठा, और कूटनीतिक संबंधों के प्रतीक भी थे। *हथ बही* उस समय की चुनौतियों, जैसे मराठा आक्रमणों और क्षेत्रीय अस्थिरता, के संदर्भ में मारवाड़ की लचीलता और संसाधन प्रबंधन की क्षमता को दर्शाती है। इस दस्तावेज़ के निष्कर्ष को विभिन्न आयामों के माध्यम से विस्तार से प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्षत:, विक्रम संवत 1824 की हथ बही मारवाड़ में अश्व प्रबंधन और सैन्य व्यवस्था की एक समग्र और गहन समझ प्रदान करती है, जो इसकी सैन्य शक्ति, आर्थिक समृद्धि, प्रशासनिक दक्षता, और सांस्कृतिक विरासत को एकीकृत करती है। यह दस्तावेज़ मारवाड़ की घुड़सवारी परंपरा और राजपूत पहचान को रेखांकित करता है, जो 18वीं शताब्दी की चुनौतियों के बीच इसकी लचीलता और शक्ति का प्रतीक है। *हथ बही* न केवल मारवाड़ के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है, बल्कि उत्तर-पश्चिम भारत के व्यापक ऐतिहासिक परिदृश्य को समझने में भी योगदान देती है। यह मारवाड़ की सांस्कृतिक और रणनीतिक गहराई का एक जीवंत दस्तावेज है, जो भविष्य के शोध और विश्लेषण के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

संदर्भ

1. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई.,पृ. 43 एफ-1-2, जोधपुर रिकॉर्ड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
2. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
3. *सोजत तालके कागज, हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
4. *नावाँ तालके कागज, हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 6
5. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
6. आर.के. सक्सेना, *राजपुताना के प्रमुख राज्यों के साथ मराठा संबंध, 1761-1818 ई.*, एस. चंद, दिल्ली, 1973.
7. *मारोठ तालके, हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
8. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., पृ. 45एफ-1-2

9. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
10. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., पृ. 44एफ-2
11. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 7
12. परबतसर तालके कागज, *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
13. *सोजत तालके कागज, हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4
14. *नावाँ तालके, हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4, जोधपुर रिकॉर्ड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार.
15. *नागौर तालके, हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 7, जोधपुर रिकॉर्ड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार.
16. *हथ बही,* नं. 1, वि.सं. 1824/1767 ई., फाल्गुन वदी 4

शोधार्थी
इतिहास विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर